

14 फरवरी 2024 : समाचार विश्लेषण

A. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 1 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

B. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

शासन:

1. वनवासियों के अधिकारों पर:

C. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

D. सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 4 से संबंधित:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

E. संपादकीय:

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध:

1. पुराने समय का विश्वास और विश्वसनीयता भारत-यूएई संबंधों को बांधती है:

अर्थव्यवस्था:

1. भारत को गहन औद्योगीकरण की आवश्यकता क्यों है?

F. प्रीलिम्स तथ्य:

1. भारत में एक खंड- ईएफटीए डील से दवा व्यापार पर असर पड़ सकता है:
2. विदेश मंत्रालय ने विदेशियों की अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया की निगरानी करने को कहा:
3. ऑटोइम्यून बीमारियों में एक्स क्रोमोसोम की भूमिका:

G. महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

H. UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

I. UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

वनवासियों के अधिकारों पर:

शासन:

विषय: कमजोर वर्गों की सुरक्षा और बेहतरी के लिए गठित तंत्र, कानून, संस्थाएं और निकाय।

मुख्य परीक्षा: आदिवासियों और वनवासियों से संबंधित मुद्दे।

विवरण:

- तमिलनाडु के इरोड जिले में थांथाई पेरियार अभयारण्य की हालिया अधिसूचना ने वनवासी समुदायों के बीच आशंका पैदा कर दी है।
- उन्हें अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006 (FRA) के तहत गारंटीकृत उनके अधिकारों के संभावित उल्लंघन का डर है।

वन घोषणा में चुनौतियाँ:

- उत्तर और दक्षिण बरगुर सहित कई आरक्षित वनों से बने थानथाई पेरियार अभयारण्य ने अपने अधिकार क्षेत्र से छह आदिवासी वन गांवों को हटा दिया है।
- यह बहिष्कार उन्हें आवश्यक अधिकारों और सुविधाओं से वंचित कर देता है, जिससे उनकी असुरक्षा और बढ़ जाती है।
- 1990 से राजस्व गांवों में परिवर्तन के लिए अनिवार्य वन गांवों की उपेक्षा की गई है, जिससे एफआरए की शर्तें कमजोर हो गई हैं।

तमिलनाडु का एफआरए कार्यान्वयन:

- राष्ट्रीय जनादेश के बावजूद तमिलनाडु वन अधिकारों को मान्यता देने में सुस्त रहा है।
- सितंबर 2023 तक, केवल 38.96 वर्ग किमी को कवर करने वाले व्यक्तिगत स्वामित्व जारी किए गए हैं, जो पात्र वन भूमि का एक छोटा सा हिस्सा दर्शाते हैं।
- हालांकि कथित तौर पर सामुदायिक शीर्षक जारी किए गए हैं, लेकिन उनकी सीमा और प्रभाव के संबंध में पारदर्शिता का अभाव है।

संरक्षण और सामुदायिक अधिकारों के बीच संघर्ष:

- थांथाई/थानथाई पेरियार अभयारण्य के भीतर पशु चराई पर प्रतिबंध वन-निवासी समुदायों की पारंपरिक प्रथाओं के लिए खतरा है। इस क्षेत्र के मूल निवासी बरगुर मवेशियों को अपने चराई के मैदानों तक सीमित पहुंच का सामना करना पड़ता है।
- इसके कारण संरक्षण अनिवार्यताओं और सामुदायिक आजीविका के बीच तनाव है।
- एफआरए द्वारा चराई अधिकारों की मान्यता के बावजूद इस तरह के प्रतिबंध, पर्यावरण संरक्षण और स्वदेशी अधिकारों को संतुलित करने की चुनौतियों का उदाहरण देते हैं।

कानूनी ढाँचे और लगातार उल्लंघन:

- वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 (Wildlife (Protection) Act 1972) और एफआरए सहित भारत का कानूनी ढांचा, स्पष्ट रूप से वन अधिकारों की सुरक्षा करता है। हालाँकि, लगातार इनके उल्लंघन और शासन की विफलताएँ वन प्रबंधन में प्रणालीगत अपर्याप्तता को उजागर करती हैं। वन-निवासी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए बनाए गए वन अधिकार अधिनियम की अक्सर उपेक्षा की जाती है, जिससे संघर्ष बढ़ते हैं और अन्याय कायम रहता है।

भावी कदम:

- कानूनी ढांचे, पारदर्शी शासन तंत्र और वन-निवास समुदायों के साथ सार्थक जुड़ाव के मजबूत कार्यान्वयन की आवश्यकता है।
- वन अधिकारों को कायम रखना न केवल एक कानूनी अनिवार्यता है, बल्कि वन परिदृश्य में समानता, न्याय और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए एक नैतिक दायित्व भी है।

सारांश:

- तमिलनाडु में थानथाई पेरियार अभयारण्य की हालिया अधिसूचना ने एफआरए के तहत उनके अधिकारों के संभावित उल्लंघन के बारे में वन समुदायों के बीच चिंता पैदा कर दी है।

तमिलनाडु में एफआरए का सुस्त कार्यान्वयन और चराई पर प्रतिबंध को लेकर संघर्ष वन प्रबंधन में संरक्षण और स्वदेशी अधिकारों को संतुलित करने में चल रही चुनौतियों को उजागर करता है।

संपादकीय-द हिन्दू

संपादकीय:

पुराने समय का विश्वास और विश्वसनीयता भारत-यूएई संबंधों को बांधती है:

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 2 से संबंधित:

अंतर्राष्ट्रीय संबंध:

विषय: द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले करार।

मुख्य परीक्षा: भारत-यूएई संबंध।

प्रसंग:

- प्रधानमंत्री मोदी इस समय यूएई के दौरे पर हैं।

वैयक्तिकृत कूटनीति:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के बीच रिश्ते की विशेषता विश्वास और विश्वसनीयता है।
- यह पारंपरिक राजनयिक मानदंडों से परे है, राजनयिक प्रोटोकॉल की तुलना में व्यक्तिगत तालमेल पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
- नेताओं के बीच नियमित बातचीत ने भारत और यूएई के बीच मजबूत द्विपक्षीय संबंधों की नींव रखी है।

मोदी की यात्रा की मुख्य बातें:

- मोदी की यह यात्रा आठ महीने की छोटी अवधि में संयुक्त अरब अमीरात की उनकी तीसरी यात्रा है।
- उल्लेखनीय घटनाओं में अबू धाबी में एक भव्य हिंदू मंदिर का उद्घाटन शामिल है, जो वर्ष 2015 में अपनी पहली यात्रा के दौरान मोदी द्वारा किया गया एक महत्वपूर्ण अनुरोध था।
- यह यात्रा जायद स्पोर्ट्स सिटी स्टेडियम में अहलान मोदी की सभा और दुबई में 11वें विश्व सरकार शिखर सम्मेलन में मोदी के संबोधन जैसे कार्यक्रमों से भी चिह्नित है।

आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाना:

- मोदी की यात्रा का उद्देश्य भारत और यूएई के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना है।
- डीपी वर्ल्ड और भारत के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा समर्थित भारत मार्ट परियोजना जैसी पहल, वैश्विक बाजारों में भारतीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के निर्यात को बढ़ाने का प्रयास करती है।
- भारत-यूएई व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते (सीईपीए) और राष्ट्रीय मुद्राओं में व्यापार से दोनों देशों के बीच व्यापार को और बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
- भारत-यूएई संबंधों से सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए निम्न लिंक पर क्लिक कीजिए: [India – UAE relationship](#)

प्रमुख उपलब्धियाँ और सहयोग:

- महत्वपूर्ण उपलब्धियों में अबू धाबी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली द्वारा ऊर्जा संक्रमण और स्थिरता में मास्टर कार्यक्रम का शुभारंभ शामिल है।
- भारत में संयुक्त अरब अमीरात के बढ़ते निवेश और इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड और अबू धाबी नेशनल ऑयल कंपनी के बीच समझौते भारत की ऊर्जा सुरक्षा में योगदान करते हैं।

- रक्षा क्षेत्र में सहयोग और क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा, जैसे गाजा की स्थिति और हौथिस के हमले, आम चुनौतियों से निपटने में भारत और यूएई के बीच रणनीतिक साझेदारी को प्रदर्शित करते हैं।

सारांश:

- प्रधानमंत्री मोदी की यूएई यात्रा व्यक्तिगत कूटनीति और आर्थिक सहयोग की विशेषता वाले मजबूत द्विपक्षीय संबंधों पर प्रकाश डालती है। रणनीतिक जुड़ाव के माध्यम से संबंधों को मजबूत करते हुए, यह यात्रा व्यापार, रक्षा सहयोग बढ़ाने और क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने पर केंद्रित है।

भारत को गहन औद्योगीकरण की आवश्यकता क्यों है?

सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र 3 से संबंधित:

अर्थव्यवस्था:

विषय: भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधन जुटाने, संवृद्धि, विकास और रोजगार से संबंधित मुद्दे

मुख्य परीक्षा: सेवा क्षेत्र के नेतृत्व वाले आर्थिक विकास पर औद्योगीकरण की पुनर्कल्पना।

विवरण: भारत का औद्योगिक ठहराव और रोजगार संकट

- भारत का विनिर्माण क्षेत्र स्थिर बना हुआ है, वर्ष 2003-2008 के दौरान एक संक्षिप्त अवधि को छोड़कर उत्पादन और रोजगार में इसकी हिस्सेदारी लगातार 20% से नीचे रही है।
- 1991 में श्रम-गहन औद्योगीकरण के लक्ष्य के साथ आर्थिक सुधारों के बावजूद, भारत में उल्लेखनीय रूप से औद्योगीकरण नहीं हुआ है।
- वर्तमान चुनौतियों में स्थिर औद्योगिक निवेश, उच्च बेरोजगारी दर और छिपी हुई बेरोजगारी शामिल हैं।
- व्यापार घाटा बढ़ रहा है, जिसका मुख्य कारण आयातित वस्तुएं हैं, जो यह दर्शाता है कि भारत घरेलू खपत के लिए सामान का उत्पादन करने में विफल रहा है, जबकि निर्यात तो दूर की बात है।

विकास रणनीतियों पर पुनर्विचार: सेवाएँ बनाम विनिर्माण

- रघुराम राजन और रोहित लांबा ने विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित उच्च-कौशल सेवाओं की वकालत करके पारंपरिक ज्ञान से हटकर प्रस्ताव दिया है।
- यह दृष्टिकोण भारत की वर्तमान औद्योगिक नीति के विपरीत है और मौजूदा मुद्दों को बढ़ा सकता है।
- सेवा-आधारित विकास में रोजगार लोच कम है, कृषि से बाहर जाने वाले श्रम को अवशोषित करने में विफल रहता है, और अत्यधिक कुशल कार्यबल की आवश्यकता होती है जिसकी भारत में कमी है।
- कुशल और अकुशल श्रमिकों के बीच महत्वपूर्ण वेतन असमानता के साथ, सेवा-संचालित विकास से उत्पन्न असमानता विनिर्माण-आधारित विकास से अधिक है।

शैक्षिक असमानता और आर्थिक विकास पर इसका प्रभाव:

- उच्च शिक्षा में शुरुआती निवेश के कारण बड़े पैमाने पर स्कूली शिक्षा की उपेक्षा हुई, जिससे शैक्षिक असमानता में योगदान हुआ।
- चीन के विपरीत, मानव पूंजी में निवेश असमान था, जिससे अभिजात्यवाद की संस्कृति को बढ़ावा मिला और उद्यमशीलता उद्यम में बाधा उत्पन्न हुई।
- स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा की अलग-अलग गुणवत्ता सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कायम रखती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों के पहली पीढ़ी के स्नातकों को नुकसान होता है।

औद्योगीकरण में सांस्कृतिक बाधाएँ:

- आर्थिक इतिहासकार जोएल मोकिर के अनुसार, सामूहिक शिक्षा की कमी ने औद्योगीकरण के लिए अनुकूल संस्कृति के विकास में बाधा उत्पन्न की।

- भारत का सांस्कृतिक दृष्टिकोण विनिर्माण के लिए आवश्यक कुछ व्यवसायों का अवमूल्यन करता है, जो नवाचार में बाधा डालता है।
- व्यावसायिक कौशल और कारीगर ज्ञान का कम मूल्यांकन जैविक नवाचार और औद्योगिक विकास को रोकता है।
- नवाचार और प्रसार के लिए जन शिक्षा और सामूहिक अवशोषण क्षमता आवश्यक है, जो गहन औद्योगीकरण के लिए आवश्यक शर्तें हैं।

गहन औद्योगीकरण के लिए अनिवार्यता:

- भारत को प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने और समाज को बदलने के लिए केवल सेवा क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय गहरे औद्योगीकरण को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- गहन औद्योगीकरण के लिए सामूहिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण में निवेश के साथ-साथ श्रम, उत्पादन और प्रौद्योगिकी को महत्व देने वाले सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता होती है।
- नवाचार को अपनाने और बड़े पैमाने पर प्रौद्योगिकी का प्रसार करने से दक्षता बढ़ सकती है और रिटर्न बढ़ सकता है।
- भारत में सतत औद्योगिक विकास के लिए शैक्षिक असमानता, सांस्कृतिक बाधाओं और आर्थिक असमानताओं को संबोधित करने वाला एक व्यापक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।

सारांश:

- भारत का स्थिर औद्योगीकरण और असमान शिक्षा आर्थिक विकास में बाधक है। सेवा-आधारित विकास पर गहन औद्योगीकरण को प्राथमिकता देने के लिए रणनीतियों की पुनर्कल्पना अनिवार्य है, जिससे सतत विकास के लिए सांस्कृतिक बदलाव, समान शिक्षा और नवाचार प्रसार की आवश्यकता होती है।

प्रोलिम्स तथ्य:

1. भारत में एक खंड- ईएफटीए डील से दवा व्यापार पर असर पड़ सकता है:

प्रसंग:

- हस्ताक्षरकर्ता देशों और फार्मास्युटिकल आवेदकों के बीच हालिया बातचीत, दवा विनियमन में संभावित बदलाव का संकेत देती है।

मुद्दा:

- मसौदे में न केवल नई रासायनिक दवाओं बल्कि मोनोक्लोनल एंटीबॉडी और वैक्सीन फॉर्मूलेशन जैसी जैविक दवाओं को भी शामिल करने के लिए डेटा विशिष्टता प्रावधानों का विस्तार करने का सुझाव दिया गया है।
- यह कदम भारत के संपन्न जेनेरिक दवा उद्योग के लिए चुनौतियां खड़ी करता है, जो लंबे समय से मंहगी दवाओं के लिए किफायती विकल्प प्रदान करता रहा है।
- भारत का दवा क्षेत्र विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है और 60,000 से अधिक जेनेरिक दवाओं का उत्पादन करता है, इस तरह के नियामक परिवर्तनों के निहितार्थ गहरे हैं।
- डेटा विशिष्टता प्रावधानों के तहत तपेदिक के इलाज के लिए बेडाक्विलिन जैसी आवश्यक दवाओं तक पहुंच को लेकर चिंताएं पैदा होती हैं।

महत्व:

- बातचीत में प्रगति के बावजूद, बौद्धिक संपदा अधिकार एक महत्वपूर्ण बाधा बना हुआ है, जो दुनिया भर में दवा की पहुंच और सामर्थ्य को प्रभावित कर रहा है। जैसे-जैसे बातचीत आगे बढ़ती है, वैश्विक फार्मास्युटिकल नियमों को आकार देने में नवाचार और पहुंच को संतुलित करना सर्वोपरि रहता है।

2. विदेश मंत्रालय ने विदेशियों की अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया की निगरानी करने को कहा:

प्रसंग:

- विदेशियों द्वारा अंग और ऊतक प्रत्यारोपण में संभावित अवैध लेनदेन पर अंकुश लगाने के लिए, नियामक चिंताओं को ध्यान में लाया गया है।

मुद्दा:

- ऐसे उदाहरण हैं जहां विदेशी नागरिक, विभिन्न चिकित्सा कारणों से भारत आकर, अंग प्रत्यारोपण गतिविधियों में संलग्न होते हैं।
- हालांकि, दाताओं और प्राप्तकर्ताओं के बीच संबंधों की पुष्टि करने वाले दस्तावेजों की प्रामाणिकता के साथ-साथ उनकी पहचान और निवास प्रमाण के बारे में संदेह जताया गया है।
- इसके लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र की आवश्यकता है।
- यह भारत में सभी विदेशी दूतावासों और मिशनों में मानव अंग और ऊतक प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 में उल्लिखित नियमों के प्रसार का आह्वान करता है।
- इसके अतिरिक्त, विदेशियों के लिए अंग दान और प्रत्यारोपण प्रक्रियाओं की देखरेख और समन्वय के लिए एक नामित नोडल अधिकारी की नियुक्ति का प्रस्ताव है।

महत्व:

- इन उपायों का उद्देश्य संभावित कदाचार से बचाव करते हुए अंग प्रत्यारोपण प्रक्रिया में पारदर्शिता और अखंडता बनाए रखना है।

3. ऑटोइम्यून बीमारियों में एक्स क्रोमोसोम की भूमिका:

प्रसंग:

- हाल के वर्षों में, अंतरराष्ट्रीय मशहूर हस्तियों की बढ़ती संख्या ने ऑटोइम्यून बीमारियों से अपने संघर्ष के बारे में खुलकर बात की है, खासकर महिलाओं में।

- ऑटोइम्यून बीमारियाँ ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली गलती से आपके शरीर में स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान पहुँचाती है।

सम्बन्धित जानकारी:

- ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के 2023 के एक अध्ययन के अनुसार, सर्वेक्षण की गई आबादी में से लगभग 10% में ऑटोइम्यून विकार थे, जिनमें से 13% महिलाएं और 7% पुरुष प्रभावित थे।
- इन स्थितियों के प्रति महिलाओं की उच्च संवेदनशीलता ने शोधकर्ताओं को हैरान कर दिया है, जो इसे आनुवंशिक, पर्यावरणीय, हार्मोनल और जीवनशैली कारकों के संयोजन के लिए जिम्मेदार मानते हैं।
- वैज्ञानिकों की हालिया खोज से पता चलता है कि महिलाओं में एक्स गुणसूत्रों में से एक पर पाई जाने वाली आणविक कोटिंग इस लिंग असमानता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- एक्स-क्रोमोसोम निष्क्रियता में शामिल यह कोटिंग, कुछ जीनों को विनियमन से बचने की अनुमति दे सकती है, जिससे संभावित रूप से ऑटोइम्यून बीमारियां हो सकती हैं।

महत्व:

- आगे के शोध का उद्देश्य इस प्रक्रिया से संबंधित विशिष्ट एंटीजन की पहचान करना, लिंग-आधारित प्रतिरक्षा विसंगतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करना और संभावित रूप से ऑटोइम्यून विकारों का बेहतर पता लगाने और निदान की सुविधा प्रदान करना है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

आज इससे संबंधित कुछ नहीं है।

UPSC प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'डेजर्ट साइक्लोन' भारत और कतर के बीच एक संयुक्त सैन्य अभ्यास है।
2. भारतीय सेना और मिस्र सेना के विशेष बलों के बीच "एक्सरसाइज साइक्लोन-1" नामक पहला संयुक्त अभ्यास 2023 में आयोजित किया गया था।
3. सदा तनसीक (Sada Tanseeq) भारत और सऊदी अरब के सशस्त्र बलों के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 1 और 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) उपरोक्त सभी

उत्तर: c

व्याख्या:

- 'डेजर्ट साइक्लोन' भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच एक संयुक्त सैन्य अभ्यास है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एसडीआर एक अंतरराष्ट्रीय आरक्षित संपत्ति है, जो विश्व बैंक द्वारा बनाई गई है।
2. आरक्षित मुद्रा सूची में जोड़ी जाने वाली नवीनतम मुद्रा चीनी रेनमिनबी है।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: b

व्याख्या:

- विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) विश्व बैंक द्वारा नहीं बनाया गया है; बल्कि, यह अपने सदस्य देशों के आधिकारिक भंडार के पूरक के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) द्वारा स्थापित

एक अंतरराष्ट्रीय आरक्षित संपत्ति है।

- चीनी रेनमिनबी (आरएमबी), जिसे युआन के नाम से भी जाना जाता है, को अक्टूबर 2016 में एसडीआर बनाने वाली मुद्राओं की टोकरी में जोड़ा गया था।

प्रश्न 3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. आईएसए की कल्पना भारत और फ्रांस द्वारा सौर ऊर्जा समाधानों की तैनाती के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के खिलाफ प्रयास जुटाने के लिए एक संयुक्त प्रयास के रूप में की गई थी।
2. लेह शून्य उत्सर्जन के साथ हरित हाइड्रोजन-आधारित गतिशीलता परियोजना को लागू करने वाला भारत का पहला शहर बनने जा रहा है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: c

व्याख्या:

- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) को वैश्विक स्तर पर सौर ऊर्जा समाधानों की तैनाती को बढ़ावा देकर जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत और फ्रांस के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास के रूप में शुरू किया गया था।
- आईएसए का लक्ष्य सौर ऊर्जा अपनाने से संबंधित आम चुनौतियों का समाधान करना और सदस्य देशों में सौर परियोजनाओं के विकास को सुविधाजनक बनाना है।
- लेह शून्य उत्सर्जन के साथ हरित हाइड्रोजन-आधारित गतिशीलता परियोजना शुरू करने वाला भारत का पहला शहर बनने के लिए तैयार है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (NOFN) 2011 में लॉन्च किया गया था और बाद में 2015 में इसका नाम बदलकर भारत नेट प्रोजेक्ट कर दिया गया।

2. यह ऑप्टिकल फाइबर का उपयोग करने वाला दुनिया का सबसे बड़ा ग्रामीण ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी कार्यक्रम है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: c

व्याख्या:

- नेशनल ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (एनओएफएन) पहल 2011 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई थी।
- 2015 में, पूरे भारत में 250,000 से अधिक ग्राम पंचायतों (ग्राम परिषदों) को हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी से जोड़ने के उद्देश्य से इसे भारत नेट प्रोजेक्ट के रूप में पुनः ब्रांडेड किया गया था।
- इस पहल का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन को पाटना और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देना है।
- ऑप्टिकल फाइबर प्रौद्योगिकी का उपयोग उच्च गति और विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी सुनिश्चित करता है, जिससे यह विश्व स्तर पर अपनी तरह का सबसे बड़ा ग्रामीण ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी कार्यक्रम बन जाता है।

प्रश्न 5. "मोमेंटम फॉर चेंज: क्लाइमेट न्यूट्रल नाउ" किसके द्वारा शुरू की गई एक पहल है?

(a) जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल

(b) यूएनईपी सचिवालय

(c) यूएनएफसीसीसी सचिवालय

(d) विश्व मौसम विज्ञान संगठन

उत्तर: c

व्याख्या:

- "मोमेंटम फॉर चेंज: क्लाइमेट न्यूट्रल नाउ" यूएनएफसीसीसी सचिवालय द्वारा शुरू की गई एक पहल है।
- इसका उद्देश्य व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारों को ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और जलवायु तटस्थता प्राप्त करने के लिए स्वैच्छिक कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करना है।
- इस पहल के माध्यम से, प्रतिभागी वैश्विक जलवायु प्रयासों में योगदान देने के लिए अपने कार्बन पदचिह्न को माप सकते हैं, कम कर सकते हैं और भरपाई कर सकते हैं।

UPSC मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न:

प्रश्न 1. भारतीय वनवासी जनजातीय समुदायों की समस्याओं पर प्रकाश डालिए। क्या एफआरए 2006 उनकी चिंताओं का प्रभावी समाधान है? चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द) [जीएस-2, सामाजिक न्याय/शासन] (Elucidate the problems of Indian forest-dwelling tribal communities. Is FRA 2006 an effective solution to their concerns? Discuss. (15 marks, 250 words) [GS-2, Social Justice/Governance])

प्रश्न 2. भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने औपचारिक और अनौपचारिक व्यावसायिक क्षेत्रों के बीच एक खाई कैसे पैदा कर दी है? प्रासंगिक उदाहरणों से पुष्टि कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द) [जीएस-3, अर्थव्यवस्था] (How has the process of industrialisation in India created a gulf between the formal and informal occupational segments? Substantiate with relevant examples. (15 marks, 250 words) [GS-3, Economy])

(नोट: मुख्य परीक्षा के अंग्रेजी भाषा के प्रश्नों पर क्लिक कर के आप अपने उत्तर **BYJU'S** की वेब साइट पर अपलोड कर सकते हैं।)